Vol XI 2022

ISSN : 2250-2653

RESEARCH FRONTS

A Peer Reviewed Journal of Multiple Sciences, Arts & Commerce

Vol XI 2022 RESEARCH FRONTS ISSN : 2250-2653

Research Fronts Vol. XI , 2022 ISSN 2250-2653
A Peer Reviewed Journal of Multiple Sciences , Arts and Commerce
Registered with
Government Digvijay Autonomous P.G. College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India

Copyright – no part of the content(s) of the volume us allowed to be reproduce without the prior permission of the Govt. Digvijay Auto. P.G. College Rajnandgaon (C.G.)

Chief Editor

Dr. K. L. Tandekar, Principal & Patron
Government Digvijay Autonomous P.G. College Rajnandgaon, Chhattisgarh

Editorial Board

- Dr. Shailendra Bharal, Prof. Commerce, Vikram University Ujjain
- Dr. Vinod Sen, Ass. Prof. Economics, IGNTU, Amarkantak
- Dr. Gaour Gopal Banik, Assot. Prof. Accountancy, Commerce college Guahati
- Dr. Jitendra Ramteke, Prof. and Head, Department of Physics, S M Mohota College of Science, Nagpur (MS)
- Dr. Anima Nanda, Dean, Bio and chemical engineering, Satyabhama, Institute of Science and Technology (Deemed to be university) Chennai 600119
- Prof Manoj Kumar Sinha, Department of Geography, Patna university.
- Dr. Pramod Kumar Mahish, Department of Biotechnology, Govt. Digvijay College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
- Dr. Keshaw Ram Adil, Department of Botany, Govt. Digvijay College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
- Prof. (Asst.) Ragini Parate, Asst. Professor of Commerce, Govt. Digvijay College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India

Board of Advisors

- Prof. M. K. Verma, Vice Chancellor, Chhattisgarh Swami Vivekanand Technical University Durg, India.
- Dr. S. K. Jadhav, Professor of Biotech. , Pt. Ravishankar Shukla University Raipur
- Dr. P. R. Chandel, Principal Govt. PG College Chhindwada (M.P.)
- Prof. Adhikesh Rai, Deal faculty of Commerce, Rani Durgawati University Indore
- Dr. Ravindra Bramhe, Professor of Economics, Pt. Ravishankar Shukla University Raipur, Chhattisgarh, India
- Dr. R. P. Patel, Professor, Department of Physics, Guru Ghasidas Central University, Bilaspur (C.G.)

Managing Editor

Prof. (Asst.) Raju Khunttey, rajugdcr@gmail.com

Published by

Government Digvijay Autonomous P.G. College Rajnandgaon, Chhattisgarh, India

Contents

S. No.	Title	Author(s)	Pages
1	Prof. Mohd. Firoz Khan: Scholarship and Simplicity is Thy Name	*Mumtaz Khan*	1 - 4
2	Assessment of Welfare Schemes for Educational Development A case study of the SC Population of Birbhum District, West Bengal	*Somnath Majhi and Sudhir Malakar*	5 - 17
3	Diversity of Rotifera in Kapileshwar lake, Ashti, Di-Wardha (M.S.)	*S.S. Nimgare and U.W. Fule*	18 - 24
4	कालिक बाजार केन्द्रों की स्थानिक–कालिक संगठन	*डुमन साहू और कृष्णनन्दन प्रसाद*	25 - 45
5	बी.एड. प्रषिक्षार्थियों के सृजनात्मक षिक्षण अभिवृत्ति पर अध्ययन	*नीतू सिंह, डॉ. निषा श्रीवास्तव*	46 - 51
6	Eco-revolution through Minor forest-based products in the state of Chhattisgarh	*Madhu Yadav and D.P. Kurre*	52 - 67
7	वित्त आयोग की ग्राम पंचायत के विकास में भूमिका	*रागिनीए के. एल. टांडेकर*	68 - 73
8	*छत्तीसगढ़ी कविता में जनजागरण (लक्ष्मण मस्तुरिया के संदर्भ में)*	कैलाश कुमार, शंकरमुनि राय	74 - 82
9	Somatogenic Properties of Soil In Relation To Microwave Remote Sensing	*A. K. Shrivastava & S. K. Patel*	83 - 94
10	कांट, कृ.च.भट्टाचार्य तथा योग	*हरनाम सिंह अलरेजा*	95 - 98

छत्तीसगढ़ी कविता में जनजागरण
(लक्ष्मण मस्तुरिया के संदर्भ में)

कैलाश कुमार, शंकरमुनि राय

Affiliation:
शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.)

Corresponding Author:

शंकरमुनि राय
shankermunirai@gmail.com

Abstract:

''चल जवान कदम–कदम चल
तोर संग है जनगण के बल
रक्षक तै देश अउ सुराज के
बजूर बनके गाज सही ढल
भारत के तंय सपूत, सिव तपसी रूद्र रूप
तोर बल म देश खड़े, हिम्मती मतंग धूत।''

इन पंक्तियों के रचनाकार लक्ष्मण मस्तुरिया हैं। छत्तीसगढ़ी कविता को जन–जन की जुबान पर उतारने वाले इस कवि ने अपनी मिट्टी को जिस प्रकार साहित्यिक रंग में रंगा है, वैसा बहुत कम रचनाकार कर पाते हैं। लक्ष्मण मस्तुरिया छत्तीसगढ के एक ऐसे कवि का नाम है जिनकी कविताएं सामान्य जन की जुबान पर निवास करती हैं। वे लोकजीवन के तो कवि हैं हीए सांस्कृतिक जागरण और देश भक्ति के भी लोकप्रिय कवि है। छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिला के ग्राम मस्तूरी में 7 जून 1949 को जन्में लक्ष्मण जी को लोग उनसे अधिक उनकी जन्मभूमि को याद करते हैंए ऐसा इसलिए कि आपने अपने नाम के साथ अपनी जन्मभूमि को जोड़ा है।

मस्तुरिया जी के साहित्यिक जीवन की शुरुआत पत्र–पत्रिकाओं में लेख तथा स्तंभ लेखन से हुई। इसी बीच आपने छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक जागरण मंच चंदैनी–गोंदा के सर्वाधिक गीतों का सृजन किया। देवारडेरा और कारी जैसे प्रसिद्ध लोकमंचों के गीतों के आप लोकप्रिय रचनाकार रहे हैं। आकाशवाणी व दूरदर्शन के अधिकांश केंद्रों में उनकी रचनाएं प्रसारित होती रही हैं। वे दूरदर्शन रायपुर से प्रसारित धारावाहिक लोकसुर के निर्माता भी थे। म्यूजिक इंडिया पालीडोर द्वारा उनके लगभग 40 गीतों के ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स, सैकड़ों कैसेट, सीडी एल्बम प्रसारित की गई

Keywords:
लक्ष्मण मस्तुरिया
छत्तीसगढ़
सांस्कृतिक जागरण

है। छत्तीसगढ़ी के अनेक लोकप्रिय फिल्म जैसे– 'मोर छैया भुइयां', 'मोर संग चलव', 'अंगना', श्भोला छत्तीसगढ़िया', 'पिंजरा के मैना', 'पुन्नी के चंदा', 'माटी मोर महतारी', 'मया के बंधना', 'अंगना', 'बइरी सजन', 'भांवर', 'जहुरिया जागो रे' आदि में आपके गीत बहुत प्रसि़द्ध हुउ है।
छोटी–बडी लगभग एक दर्जन काव्य संग्रहो के रचनाकार लक्ष्मण मस्तुरिया जी को उनकी काव्य कला के लिए अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं।
लक्ष्मण मस्तुरिया की कविताओं में जनजागरण के तत्व के साथ ही सामाजिक जीवन के भी विविध पक्ष उजागर हुए हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में इन्हीं बातों को ध्यान मे रखकर उनकी काव्यकला के विविध रुपों को उजागर किया गया है।

उपजाऊ भूमि पर लहलहाते, हरे–भरे फसल हो या प्रगतिशील विचारों का सृजन, छत्तीसगढ़ की धरा सदैव ही उर्वर रही है। छत्तीसगढ़ की माटी ने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के तर्कशील और विचारवान महापुरुषों को जन्म दिया है जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन के साथ ही राज्य में सामाजिक चेतना जागृत कर जनोद्धार के कार्य में बढ़–चढ़कर भाग लिया और राज्य का प्रतिनिधित्व किया। यहाँ की जनता सीधे–सादे और भोले–भाले होने के बाद भी प्रारंभ से ही सही और गलत का तर्क करने में अत्यंत पटु रहे है। जब विदेशी ताकतों के बर्बरतापूर्ण शासन से मुक्ति की बात आई तब भी यहाँ के वीरों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर आजादी की जंग लड़ी। अपने कर्तव्य पथ पर चलते हुए छत्तीसगढ़ के स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वप्रथम वीर नारायण सिंह और उनके परवर्ती कितने ही लोग स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़कर शहीद हुए। ठीक ऐसे ही बात जब महात्मा गांधी के अहिंसावादी आंदोलन की चली तब भी यहाँ की जनता ने उनके कदम से कदम मिलाकर साथ दिया। सुंदरलाल शर्मा, पंडित रविशंकर शुक्ल, वामनराव लाखे, माधवराव सप्रे, ठाकुर प्यारेलाल सिंह आदि अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने तन मन धन से समर्पित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय होकर राज्य के साथ ही देश की सेवा की।

जनजागरण के माध्यम के रूप में कविता और गीतों की प्रत्येक काल मे सशक्त भूमिका रही है। छत्तीसगढ़ी कवियों ने भी अपने गीतों और कविताओं के माध्यम से जनता को जागरूक कर उनके जीवन स्तर में सुधार लाने की भरपूर कोशिश की है। छत्तीसगढ़ कबीर के समकालीन शिष्य संत धर्मदास के लिए भी प्रसिद्ध है, उन्होंने कबीर के निर्गुण पंथ का अनुसरण करते हुए आत्मा और परमात्मा का एकाकार कर ध्यान–साधना के माध्यम से आत्म साक्षात्कार के पथ पर भक्ति का स्वरूप निर्धारित किया है। इसी कड़ी में संत गुरु घासीदास ने श्मनखे मनखे एक समानश का नारा देकर पंथी गीतों के माध्यम से समाज मे व्याप्त छुआ–छूत, ऊँच–नीच, जाति–पांति सहित अनेक आडंबरों के विरूद्ध जनआन्दोलन चलाया।

आधुनिक काल मे पंडित सुंदरलाल शर्मा ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जेल में रहते हुए दानलीला लिखकर राज्य की जनता को पराधीनता काल मे संयम और संकल्प के साथ स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये प्रेरित किया। जनकवि कोदूराम दलित का इस क्षेत्र में विशेष योगदान है।

इस प्रकार छत्तीसगढ़ में अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के कवि हुए है जिन्होंने अपने स्थानीय लोकभाषा के माध्यम से यहाँ की जनता को संघर्ष, स्वाभिमान तथा भक्ति के साथ ही स्वावलंबन का पाठ पढ़ाकर संवेदनशील,सक्षम और आत्मनिर्भर बनाने में भरपूर योगदान दिया है।

लक्ष्मण मस्तुरिया का व्यक्तितत्व एवम कृतित्व :–

लक्ष्मण मस्तुरिया का जन्म छत्तीसगढ़ राज्य में बिलासपुर जिला के ग्राम मस्तूरी में 7 जून 1949 को हुआ था। उन्होंने हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर के बाद बीएड किया। उनके साहित्यिक जीवन की शुरुआत पत्र–पत्रिकाओं में लेख तथा स्तंभ लेखन से हुई। उनके द्वारा छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक जागरण मंच चंदैनी–गोंदा के सर्वाधिक गीतों का सृजन किया गया। देवारडेरा और कारी जैसे प्रसिद्ध लोकमंच के गीतों के वे रचयिता हैं। आकाशवाणी व दूरदर्शन के अधिकांश केंद्रों में उनकी रचनाएं प्रसारित होती रही है। वे दूरदर्शन रायपुर से प्रसारित धारावाहिक लोकसुर के निर्माता भी थे। म्यूजिक इंडिया पालीडोर द्वारा उनके लगभग 40 गीतों के ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स, सैकड़ों कैसेट, सीडी एल्बम प्रसारित की गई है। छत्तीसगढ़ी के अनेक लोकप्रिय फिल्म जैसे– 'मोर छैया भुइयां', 'मोर संग चलव', 'अंगना', श्भोला छत्तीसगढ़िया', 'पिंजरा के मैना', 'पुन्नी के चंदा', 'माटी मोर महतारी', 'मया के बंधना', 'अंगना', 'बइरी सजन', 'भांवर', 'जहुरिया जागो रे' आदि में गीत लिखा है।

लक्ष्मण मस्तुरिया के प्रकाशित साहित्य :–

1. माटी कहे कुम्हार से (छत्तीसगढ़ी निबंध संग्रह)
2. सांवरी (छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)
3. मोर संग चलव (छत्तीसगढ़ी गीत संग्रह)
4. सिर्फ सत्य के लिए (हिंदी काव्य संग्रह)
5. छत्तीसगढ़ी गुनान गोठ (छत्तीसगढ़ी निबंध संग्रह)
6. सोनाखान के आगी (अमर शहीद वीर नारायण की वीर गाथा काव्य)
7. हमु बेटा भूईया के (छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)
8. गवई–गंगा (छत्तीसगढ़ी गीत संकलन)
9. घुनही बसुरिया (छत्तीसगढ़ी गीत संकलन)
10. चंदैनी गोंदा में लक्ष्मण मस्तुरिया के गीत
11. छत्तीसगढ़ के माटी (छत्तीसगढ़ दर्शन)

उनकी उत्कृष्ट रचनाओं एवं साहित्यिक अवदानों के लिए उन्हें राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनेक सम्मान प्राप्त हुए है, जो प्रमुखतः निम्नानुसार है :–

छत्तीसगढ़ काव्य भूषण लोकस्वर, विशेष प्रतिभा सम्मान, स्वर्गीय ठाकुर प्यारेलाल सिंह अलंकरण सम्मान, छत्तीसगढ़ी विभूषण, सृजन सम्मान, निराला हिंदी साहित्य सम्मान, उत्कृष्ट काव्य प्रस्तुति, राजीव संस्कृति सम्मान, शहीद वीर नारायण सिंह लोककला संस्कृति सम्मान, छत्तीसगढ़ी फिल्म समारोह 2003 सर्वश्रेष्ठ गीतकार सम्मान, यशस्वी गीतकार सम्मान, छेदीलाल बैरिस्टर अलंकरण सम्मान, श्री हरि ठाकुर स्मृति सम्मान, जनश्री सम्मान, रामचंद्र देशमुख 'बहुमत' सम्मान, सृजन सम्मान द्वारा कृति सम्मान 2008 से सम्मानित। दुष्यंत कुमार स्मृति संग्रहालय भोपाल द्वारा स्थापित आंचलिक रचनाकार सम्मान। छत्तीसगढ़ राज्य के भाषा परिषद के प्रथम अध्यक्ष। हिंदी विभाग अध्यक्ष राजकुमार कॉलेज से सेवानिवृत्त।

लोकसुर मासिक पत्रिका एवं अंबर का आशीष (पवन दीवान) का संपादन व प्रकाशन। अनेक अन्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

लक्ष्मण मस्तुरिया की कविताओं में जनजागरण के तत्व :– लक्ष्मण मस्तुरिया ने अपने छत्तीसगढ़ी कविता तथा गीतों में जन चेतना एवं जन जागृति को विशेष महत्व दिया। उनके द्वारा श्चंदैनी गोंदाश सांस्कृतिक मंच के लिए अनेक गीत लिखे गए जिसका गांव–गांव में मंचन किया गया। वे अपने गीतों एवं कविताओं के माध्यम से लोगों को सामाजिक बुराइयों से निवृत्त होकर ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों– अशिक्षा, अंधविश्वास ऊँच– नीच और छुआछूत आदि को तिरोहित कर समाज में एकता और

भाईचारा की भावना को प्रबल करने के लिये कृत संकल्प थे। समाज के सभी पक्षों पर उनकी लेखनी समान रूप से चली है। वे देश की रक्षा के लिए सीमा परतैनात जवानों का उत्साह बढ़ाते हुए लिखते है :–

''चल जवान कदम–कदम चल
तोर संग है जनगण के बल
रक्षक तै देश अउ सुराज के
बजूर बनके गाज सही ढल
भारत के तंय सपूत, सिव तपसी रूद्र रूप
तोर बल म देश खड़े, हिम्मती मतंग धूत।''[1]

छत्तीसगढ़ की जनता में निहित आत्मविश्वास और आत्म सम्मान को उन्होंने सदैव गौरवान्वित किया है। छत्तीसगढ़िया के बलिष्ठ शरीर और कोमल ह्रदय का गान उन्होंने अपने अधिकांश गीतों में गाया है :–

''मंय छत्तीसगढ़िया अव ग
भारत मां के रतन बेटा बढ़िया आंव रे
सोन उगाथौं माटी खाथों
मान ल देके हांसी पांथौ
खेती खार संग मोर मितानी
घाम मयारू हितवा पाथौं
देश मया के भारत गीता
दाई ददा मोर राम अउ सीता
दया मया मोर परवा छानी
पर के सेवा मोर सिखानी।''[2]

मस्तुरिया जी ने न सिर्फ छत्तीसगढ़ की महिमा का वर्णन अपनी कविताओं में किया बल्कि भारत की संस्कृति और यहाँ के विरासत का भी मुक्त कंठ प्रसंसा कर छत्तीसगढ़ वासियो में देश गौरव की भावना का भी सृजन किया है :–

''जहां राम हे रहीम हे, इसा गुरु गोविंद नाम हे
चंदन कस कसमीर
कन्याकुमारी कुमकुम
छम छमा छम गुजर भुंइ
बंगभूमि रुमझुम
जईसे एक बांसुरी म सात सुर तान हे
सबो धरम एक मरम
साज आनी–बानी
रूप एक आवाज एक
एक हवा पानी
जेकर देह देश गांव जइसे प्रान हे।''[3]

अपनी सबसे प्रसिद्ध रचना श्मोर संग चलव रेष के माध्यम से वे समाज के सभी वर्ग के लोगो को एक पाँत में खड़ा होकर चलने के लिए प्रेरित करते हुए दीन– हीन लोगों को अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए सदैव संघर्षरत रहने के लिये आत्मविश्वास भरने का कार्य किया :–

''मोर संग चलव रे, मोर संग चलव जी

वो गिरे थके हपटे मन अउ परे डरे मनखे मन
मोर संग चलव रे मोर संग चलव ग
अमरइया कस जुड़ छाव म मोर संग बइठ जुड़ा लव
पानी पीलव मैं सागर आंव दुख पीरा बिसरा लव
नवा जोत लव नवा गांव बर, रसता नवा गढ़व रे
मोर संग चलव जी...... ।''[4]

छतीसगढ़ कृषि प्रधान राज्य है। यहाँ की 70 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। मस्तुरिया जी किसान का कर्त्तव्य बताते हुए उन्हें भावी संघर्षों के लिए तैयार रहने की प्रेरणा देते है। स्वयं किसान पुत्र होने के नाते वे जानते हैं कि किसानों का जीवन आसान नही है। किंतु पूरे देश के भरण पोषण का दायित्व किसानों पर ही निर्भर है :–

''मोर राजा दुलरवा बेटा
तंय नंगरिहा बन जाबे।
मनखे के मनखेपन खातिर,
तय समूहे जूझ जाबे
माटी के मरजाद रखे बर,
भभक के बुझ जाबे।
भारत मां के लाज रखे बर,
पहरिया बन जाबे...... तंय नगरिहा बन जाबे।''[5]

आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारधारा का अनुसरण करते हुए कबीर और संत धर्मदास की परम्परा के अनुरूप मस्तुरिया जी ने धार्मिक उपदेश को अपने जागरण के गीतों में समाहित किया है :–

''नाम – रूप गुन बिन हे बेकाम
ज्ञान –बुध बिन सेवा बेदाम
त्याग बिन धन – बल हे हराम
धरम बिन तन हे सरहा चाम
बाढ़े मन गुन गौरव सभिमान
होवै गुरु माता – पिता के मान
भइया हो अइसे करो कुछ काम
के जुग–जुग होवै तुंहर नाम।''[6]

नेताओं के पिछलग्गू बनकर घूमने वाले और कर्त्तव्य विमुख लोगों को लताड़ते हुए कवि समझाते है कि नेता के हाथों किसी की भलाई नही हो सकती । मेहनत से ही भला हो सकता है। नेता अपना स्वार्थ पूर्ण होने के बाद भूल जाएगें फिर पछतावा के अलावा कुछ भी हाथ नही आएगा :–

''तोर जागे बिना छत्तीसगढ़ राज नई जगै
नेता– मंत्री के जय बोले म तोर भाग नइ जगै
अब लूट ले अधिकार लुटइया के हाथ ले
गुंगवाए रोए गाय म कुछ हाथ नइ लगै।''[7]

बिना विवेक के काम करने वाले लोगो को समझते हुए कहते हैं कि गुणहीन व्यक्ति को कभी भी महत्व प्राप्त नही होता। प्रकृति का नियम है कि जिससे कुछ भी प्राप्त होने की संभावना नजर नही आती उसे दरकिनार कर दिया जाता है :–

''झरगे जेखर डारा पाना
वो रुखवा तीर अब कोन बइठे
सरहा डोरी कोन बंधाही
कतको जोरे कतको अंइठे
सूक्खा मधुमक्खी के छत्ता ले
मधुरस झारत है।''[8]

मस्तुरिया जी ने अपने अनेक कविताओं में मेहनत की महिमा का मुक्तकंठ बखान किया है। स्वयं मेहनतकश किसान घर में जन्म लेने से उनको मेहनत के महत्व का स्वाभाविक ज्ञान है। वे मानते है कि मेहनत से ही मान सम्मान और स्वाभिमान को बचा सकते है :–

''मनखे के जिनगी तो, मेहनत के नाम हे
मेहनत के पीछू म मनखे के दाम हे
आसा–बिसवास मन–हिरदे सम्मान भरो
जुरमिल के काम करो रे
जिनगी निरमान करो रे
मेहनत के बल दुनिया म नाम करो।''[9]

आज के समय मे राजनीतिक पार्टियों की वजह से जो सामाजिक विखंडन की स्थिति उत्पन्न हुई है उसका उल्लेख करते हैं। आज एक ही गाँव मे लोग विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में बटें हुए हैं जिससे आपसी मतभेद और विरोध के कारण सामाजिक एकता को क्षति पहुँच रही है :–

''राजनीति के गदहा
घोड़ा के चाल म चलगे
गांव–बस्ती– परिवार
पार्टी–पार्टी म बदलगे।''[10]

कवि लोगों को अपने हक और अधिकार के लिए सचेत करते हुए कहते है :–

''हक पायेबर लड़ना पड़थे
जिए खातिर मरना पड़थे
त्याग तपसिया म खपना परथे
तब पीढ़ी के पीरा हरथे।''[11]

कवि जनता को शारीरिक और मानसिक सुचिता के साथ ही परिवेश की स्वच्छता के लिए सजग करते है। प्रकृति की शुद्धता से स्वास्थ्य का सीधा संबंध बताते हुए लोगो को जागरूक करने का प्रयास करते हैं :–

''साफ रहे बने कुआ बावली
तरिया नदिया के पानी
बाग बगीचा खेती खार
नाली घर परवा छानी
साफ हवा पानी है भैया

सब ले बड़े दवाई।''[12]

शासन प्रशासन में नौकरशाही के माध्यम से गाँव के गरीब और भोले–भाले जनता की अज्ञानता का फायदा उठाकर नित्य प्रति होने वाली वसूली और रिश्वतखोरी के मामले पर कुठाराघात करते हुए कहते हैं :–

''ले देके काम चलाना जग बेवहार होगे हे
दफ्तर के शिष्टाचार भ्रष्टाचार हो गे हे
ईमान धरम त्याग सब निस्सार हो गे हे
बड़े मनखे के पहिचान बंगला कार हो गे हे।''[13]

समाज मे शिक्षा के अभाव और अंधविश्वास तथा रूढ़िवादिता के कारण सर्वत्र व्याप्त ऊँच–नीच की भावना को मिटाकर एक साथ रहने में ही सबकी भलाई बताते हुए लिखते हैं :–

''मानुस के एक जात, सब धरम के एक बात
भेदभाव छोड़ सबो, आगू बढ़बो साथ–साथ
जुरमिल के रहिबो सबो संगी हो अंजोर के
अब नवा बिहान करना हे।''[14]

जीवन मे शिक्षा की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए लोगो को ज्ञान प्राप्ति के लिये प्रेरित करते रहे हैं। शिक्षा से बड़ा साथी कोई नही है। इसके अभाव में जीवन भर पछताने के अलावा कोई चारा नही बचता :–

''संगी साथी भले भुला दे अक्षर ज्ञान संग देथे
अल्हा ठल्हा दुख बीपत म जीव पीरा हर लेथे
पढ़े–लिखे के अवसर म जे निरक्षत रहि जाथे
छटपटात जिनगी भर रहिथे मरे बेरा पछताथे।''[15]

मस्तुरिया जी ने छत्तीसगढ़ की महान विभूतियों के माध्यम से लोगों का जगाने का पुनीत कार्य किया। अपने लघु काव्य संकलन श्सोनाखान के आगीश के माध्यम से छत्तीसगढ़ की स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम शहीद वीर नारायण सिंह के संघर्ष और शहादत को मूर्तिमान किया है।

काव्य के प्रारंभ में भारत देश और छत्तीसगढ़ राज्य का महिमामंडन करते हैं :–

''धरम धाम भारत भुइंया के
मंझ म हे छत्तीसगढ़ राज
जिन्हा के माटी सोनहा धनहा
लोहा कोयला उगले खान।''[16]

कवि ने समाज में विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त दुराचार तथा अत्याचार के विरुद्ध सामुहिक रूप से प्रतिरोध को बल दिया है। धर्म शास्त्रों में भी अन्याय सहने को पाप की श्रेणी में रखा गया है :–

''अनियायी के अनियाय सहना
सब ले बड़े होथे अनियाय
काट के पापी ल खुद कट जावे
धरम–करम गीता गुण गाए।''[17]

''सत्य भले ही परेशान हो सकता है किन्तु पराजित नही'' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए कवि ने शहीद वीर नारायब सिंह के अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत को अन्याय का प्रतिकार बताते हुए जनता को सदैव अत्याचार के विरुद्ध लामबंद होकर विरोध करने के लिये प्रेरित किया है :—

''अन्यायी कट कचरा होथे
न्यायी खप के सोन समान
धरमी जागे अलख जगावे
पापी के मुंह कसे लगाम।''[18]

छत्तीसगढ़ की धरती में कितनो ही महापुरुष हुए है जिन्होंने न्याय की स्थापना के लिए अन्याय के विरुद्ध जमकर लोहा लिया है :—

''असने कतको बीर खपे है
छत्तीसगढ़ के माटी म
कांध ले कांध मिला के रेंगे
देश के सुख—दुख पाती म।''[19]

जब भी देश के स्वाभिमान पर आंच आती है तो उसकी रक्षा के लिए अपने व्यक्तिगत हित को तिलांजलि देकर राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित होने का जज्बा देशवासियों के लिये आवश्यक है :—

''जय माटी जय जन्म भूमि के
जय हो भारत मैया के
बोलौ जागो जुरिया जावौ
रुप धरो वीरसैया के।''[20]

देश की जनता को हर परिस्थिति में अन्याय का प्रतिकार करना ही चाहिए। कवि जनता का आव्हान करते हैं कि समाज विरोधी ताकतों के विरुद्ध संगठित होकर संघर्ष करने से ही समाज मे सुधार संभव हो सकता है :—

''अरे नाग तै काट नहीं त
जी भर के फूफकार तो रे
अरे बाघ तै मार नहीं त
गरज गरज धुत्तकार तो रे।''[21]

इस प्रकार लक्ष्मण मस्तुरिया जी ने छत्तीसगढ़ की जनता के समाजिक और आर्थिक विकास के साथ ही उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से सबल बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। उनकी कविताएँ और गीत गॉव—गली और खेत—खलिहानों में आज भी मधुर आवाजों में गूंजते रहते है। खेतों में काम करता किसान श्मोर संग चलव रेश गाते हुए जब काम में तल्लीन रहता है तो उसे पता ही नही चलता कि कब सुबह से शाम हो गई। मस्तुरिया जी ने श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों के गीतों की रचना तो की ही इसके अतिरिक्त अपने उपदेश परक कविताओं के माध्यम से बहुत ही सहजता से लोगों के मन मे जनजागृति की भावना का उद्रेक किया। उन्होंने राम और रहीम के भेद को खत्म करके व्यर्थ के कलह से लोगो को बचाया और मेहनत की पूजा का पथ प्रदर्शन किया, जिसका परिणाम है कि छत्तीसगढ़ आज भी साम्प्रदायिकता के कलंक से कोसों दूर है।

संदर्भ ग्रंथ :—

1. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 16
2. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 17
3. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 18
4. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 21
5. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 22
6. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 51
7. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 62
8. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 63
9. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 64
10. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 80
11. मस्तुरिया लक्ष्मण ''मोर संग चलव'' वैभव प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 87
12. मस्तुरिया लक्ष्मण ''सांवरी'' लोकसुर प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 02
13. मस्तुरिया लक्ष्मण ''सांवरी'' लोकसुर प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 07
14. मस्तुरिया लक्ष्मण ''सांवरी'' लोकसुर प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 11
15. मस्तुरिया लक्ष्मण ''सांवरी'' लोकसुर प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 70
16. मस्तुरिया लक्ष्मण ''सोनाखान के आगी'' लोकसुर प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 09
17. मस्तुरिया लक्ष्मण ''सोनाखान के आगी'' लोकसुर प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 21
18. मस्तुरिया लक्ष्मण ''सोनाखान के आगी'' लोकसुर प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 23
19. मस्तुरिया लक्ष्मण ''सोनाखान के आगी'' लोकसुर प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 29
20. मस्तुरिया लक्ष्मण ''सोनाखान के आगी'' लोकसुर प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 31
21. मस्तुरिया लक्ष्मण ''सोनाखान के आगी'' लोकसुर प्रकाशन रायपुर पृष्ठ 31

*****